'एक दिवसीय राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी' 11 जून, 2024

रिपोर्ट

राजकीय महाविद्यालय चायल-कोटी एवं राजकीय महाविद्यालय सुन्नी के संयुक्त तत्त्वाधान में सुन्नी महाविद्यालय में 'राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद' (NAAC) एवं 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020' पर 11 जून, 2024 को राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह गोष्ठी दो सत्रों में सम्पन्न हुई। इसका आरम्भ दोनों पायोजक महाविद्यालयों के प्राचार्यों : डॉ. आर. एल. शर्मा (सुन्नी) एवं डॉ. दीपशिखा भारद्वाज (चायल-कोटी) द्वारा वहाँ उपस्थित विशिष्ट अतिथियों के स्वागत-सत्कार से हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य, महाविद्यालय सुन्नी डॉ. आर. एल. शर्मा के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020' के लागू होने में आने वाली समस्याओं की ओर वहाँ उपस्थित विद्वत जनों का ध्यान केंद्रित किया। प्रथम सत्र में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति, उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुनील गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने व्याख्यान में उन्होंने एन. ए. ए. सी. (NAAC) मूल्यांकन से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की और साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संदर्भ में कहा कि बिना तैयारी के इस शिक्षा नीति को लागू नहीं किया जाना चाहिए। नीति का मूल उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब सरकार शिक्षाविदों के साथ मिलकर काम करेगी और इससे जुड़े सभी विभाग इस दिशा में कार्य करेंगे। दूसरी मुख्य वक्ता डॉ. नीरू स्नेही (National Institute of Education Planning and Administration (NIEPA) उच्च शिक्षा विभाग, दिल्ली से हमारे साथ ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रही। उन्होंने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020' पर बड़ी सूक्ष्मता एवं संक्षेप में चर्चा की। इस सत्र में डॉ. पंकज बसोतिया (प्राचार्य रामपुर कॉलेज), डॉ. राजेश धौरटा (प्राचार्य कुमारसैन कॉलेज), डॉ. मौली अब्राहिम (प्राचार्या सेंट बीड्स कॉलेज), दोनों महाविद्यालयों के सभी प्राध्यापक एवं सुन्नी महाविद्यालय के एन. एस. एस. तथा स्काउट एंड गाइड्स के विद्यार्थी भी उपस्थित रहें।

द्वितीय सत्र में डॉ. हरीश ठाकुर (विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, एच. पी.यू.) मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि की भूमिका में उपस्थित रहें। उच्च शिक्षा निदेशालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश से डॉ. गोपाल संघाईक एवं मनीषा कोहली ने भी न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज की; बल्कि एन. ए. ए. सी. (NAAC) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। महाविद्यालय सुन्नी से डॉ. धर्मेंद्र मेहता एवं चायल-कोटी महाविद्यालय से डॉ. देवेंद्र शर्मा ने अपने विचारों से उपस्थित सभी प्रबुद्ध जनों को लाभान्वित किया। कार्यक्रम का समापन डॉ. दीपशिखा भारद्वाज, प्राचार्या, चायल-कोटी, के आभार वक्तव्य से हुआ। उन्होंने सुन्नी महाविद्यालय के सहयोग, अन्य महाविद्यालय से आए प्राचार्यों, सभी प्रमुख वक्ताओं एवं वहाँ उपस्थित सभी प्राध्यापकों एवं छात्रों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। यह विचार-गोष्ठी राष्ट्रीय शिक्षा

Scanned with OKEN Scanner

के मजदूरों द्वारा किया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर सुन्नी कालेज में विचार गोष्ठी

सुन्नी। राजकीय महाविद्यालय चायल- कोटी एवं राजकीय महाविद्यालय सुन्नी के संयुक्त तत्वावधान में सुन्नी महाविद्यालय में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह गोष्ठी दो सत्रों में संपन्न हुई। पहले सत्र में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति, उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष डा. सुनील गुप्ता ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। अपने व्याख्यान में उन्होंने एनएएसी. मूल्यांकन से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई और साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संदर्भ में कहा कि बिना तैयारी के इस शिक्षा नीति को लागू नहीं किया जाना चाहिए। नीति का मूल उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब सरकार शिक्षाविदों के साथ मिलकर काम करेगी और इससे जुड़े सभी विभाग इस दिशा में कार्य करेंगे। इस मौके पर मुख्य वक्ता डा. नीरू स्नेही एनआईईपीए के उच्च शिक्षा विभाग, दिल्ली से ऑनलाइन माध्यम से जुड़ी रहीं। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर बड़ी सूक्ष्मता एवं संक्षेप में चर्चा की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर सुन्नी डिग्री कालेज में विचार गोष्ठी

दो सत्रों में हुई विचार गोष्ठी में विशेषज्ञों ने रखने अपने विचार

सुन्नी कालेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर चर्चा।

संदेश ब्यूरो

शिमला, 13 जून : राजकीय महाविद्यालय चायल-कोटी एवं राजकीय महाविद्यालय सुन्नी के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह गोष्ठी दो सत्रों में सम्पन्न हुई। पहले सत्र में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति, उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष डा. सुनील गुप्ता ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। अपने व्याख्यान में उन्होंने एनएएसी मूल्यांकन से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई और साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संदर्भ में कहा कि बिना तैयारी के इस शिक्षा नीति को लागू नहीं किया जाना चाहिए। नीति का मूल उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब सरकार शिक्षाविदों के साथ मिलकर काम करेगी और इससे जुड़े सभी विभाग इस दिशा में कार्य करेंगे। इस मौके पर मुख्य वक्ता डा. नीरू स्नेही एनआईईपीए के उच्च शिक्षा विभाग दिल्ली से ऑनलाइन माध्यम से जुड़ी रहीं। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर बड़ी सूक्ष्मता एवं संक्षेप में चर्चा की। इस सत्र में सुन्नी महाविद्यालय के प्राचार्य डा. [illegible] शर्मा एवं चायल-कोटी महाविद्यालय की प्राचार्या डा. [illegible] भारद्वाज के अतिरिक्त डा. पंकज [illegible] प्राचार्य [illegible] कालेज, डा. [illegible] प्राचार्य [illegible] कालेज, डा. [illegible] सेंट बीड्स कालेज, दोनों महाविद्यालयों के सभी प्राध्यापक एवं सुन्नी महाविद्यालय के एनएसएस तथा स्काउट एंड गाइड्स के विद्यार्थी भी मौजूद रहे। द्वितीय सत्र में डा. [illegible] ठाकुर विभागाध्यक्ष राजनीतिशास्त्र विभाग एचपीयू ने मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप में भूमिका निभाई। उच्च शिक्षा निदेशालय, शिमला हिमाचल प्रदेश से डॉ. [illegible] एवं [illegible] ने भी न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज की, बल्कि एनएएसी एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को उपस्थित लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया। महाविद्यालय सुन्नी से डा. [illegible] एवं चायल-कोटी महाविद्यालय से डा. [illegible] शर्मा ने अपने विचार रखे। यह विचार-गोष्ठी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को लागू करने की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण सुझावों के साथ सफल रही।

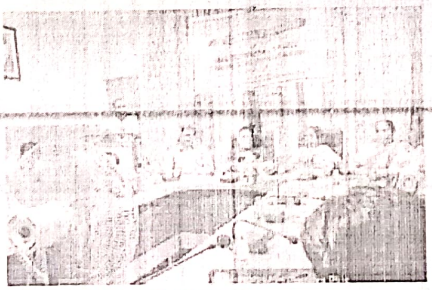

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर सुन्नी डिग्री कॉलेज में विचार गोष्ठी संपन्न

अंशुमन सिरर/शिमला

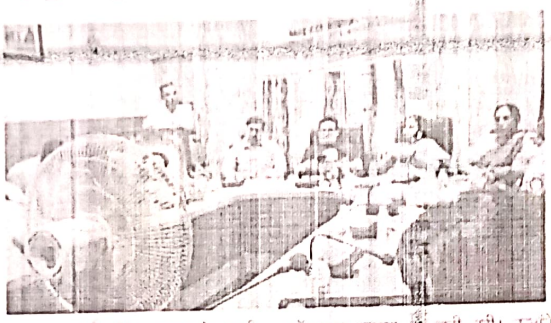

राजकीय महाविद्यालय चायल-कोटी एवं राजकीय महाविद्यालय सुन्नी के संयुक्त तत्वावधान में सुन्नी महाविद्यालय में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह गोष्ठी दो सत्रों में सम्पन्न हुई। पहले सत्र में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति, उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुनील गुप्ता ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। अपने व्याख्यान में उन्होंने एनएएसी मूल्यांकन से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई और साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में कहा कि बिना तैयारी के इस शिक्षा नीति को लागू नहीं किया जाना चाहिए। नीति का मूल उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब सरकार शिक्षाविदों के साथ मिलकर काम करेगी और इससे जुड़े सभी विभाग इस दिशा में कार्य करेंगे। इस मौके पर मुख्य वक्ता डॉ0. नीरू स्नेही एनआईईपीए के उच्च शिक्षा विभाग, दिल्ली से ऑनलाइन माध्यम से जुड़ी रहीं। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर बड़ी सूक्ष्मता एवं संक्षेप में चर्चा की। इस सत्र में सुन्नी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0. आरएल. शर्मा एवं चायल-कोटी महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0. दीपशिखा भारद्वाज के अतिरिक्त डॉ0. पंकज वर्मानिया प्राचार्य रामपुर कॉलेज, डॉ0. राजेश शौरटा प्राचार्य कुमारसैन कॉलेज, डॉ0. मोनी अग्रहिम प्राचार्या सेंट बीड्स कॉलेज, दोनों महाविद्यालयों के सभी प्राध्यापक एवं सुन्नी महाविद्यालय के एनएसएस. तथा स्काउट एंड गाइड्स के विद्यार्थी भी मौजूद रहें।

द्वितीय सत्र में डॉ0. हरीश ठाकुर (विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, एच.पी.यू.) बतौर मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप में भूमिका निभाई। उच्च शिक्षा निदेशालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश से डॉ0. गोपाल संभाईक एवं मनीषा काहली ने भी न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज की, बल्कि एन.ए.ए.सी. एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को उपस्थित लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया।

Principal

Govt. College Chail Koti

Principal
Govt. Degree College
Chail-Koti, Shimla-12

Scanned with OKEN Scanner

PROGRAMME

11 June 2024

INAUGURAL SESSION 10:00 AM

Welcome Speech by

Dr. R. L Sharma
Principal, ABV, Government College, Sunni, Shimla.

KEYNOTE ADDRESS 11:00 AM

Prof. Sunil Gupta
Former Vice Chancellor, H. P. University and Former Chairman
HP Higher Education Council.
Analysis of NEP 2020 in the Light of NAAC Accreditation

ONLINE SPECIAL LECTURE 12:00 PM

Prof. Neeru Snehi
Department of Higher and Professional Education, National Institute of Educational Planning and Administration (NIEPA) Delhi.
Role of NEP 2020 in Transforming Higher Education in India

PANEL DISCUSSION - 02:00 PM

Each Panelist will Speak for 20 minutes
and will be followed by a discussion

1. **Prof.S S Narta**
Dean Colleges,HPU

2. **Dr.Gopal Sanghaik**
Principal college cadre (OSD),in DHE

3. **Dr.Maneesha Kohli**
Principal college cadre (OSD),in DHE

4. **Prof. Dharmender Mehta,**
Associate Professor, Commerce

ORGANIZING COMMITTEE

PATRON

DR. R. L. SHARMA
Principal, ABV, Government College, Sunni, Shimla.

DR. DEEPSHIKHA BHARDWAJ
Principal, Government College, Chail-Koti, Shimla.

COORDINATOR

DR. SUBHASH KAPTA
Associate Professor, History,
Govt. College, Chail-Koti, Shimla

ORGANSING COMMITTEE

DR DHARMENDER MEHTA,
Associate Professor, Commerce,
ABV, GDC, Sunni, Shimla

DR SUNIL ACHARYA,
Assistant Professor, History,
ABV, GDC, Sunni, Shimla

DR AJAY KAITH,
Assistant Professor, Commerce,
GDC, Chail-Koti.

DR AMRIT MEHTA,
Assistant Professor, Sociology,
GDC Chail-Koti, Shimla

DR DEVENDER SHARMA,
Assistant Professor,
Political Science, GDC, Chail-Koti.

Scanned with OKEN Scanner

Where the mind is without fear and the head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not been broken up into fragments
By narrow domestic walls
Where words come out from the depth of truth
Where tireless striving stretches its arms towards perfection
Where the clear stream of reason has not lost its way
Into the dreary desert sand of dead habit
Where the mind is led forward by thee
Into ever-widening thought and action
Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake."

– Rabindranath Tagore,
Poem 35, Geetanjali, 1912

Education is a Janus-faced area of social action. On the one side, it does create the possibilities of change in social relationships; on the other side, it is a preservationist role that education performs. It permits society to reproduce itself. Now, which of these roles will come to the fore, or which of these roles will dominate in a certain period of history depends on historical circumstances and the extent to which a state is able to understand the agency of education and apply the agency for the goals which people agree on.

EDUCATION POLICY

In its simplest sense, policy refers to a broad statement that reflects future goals and aspirations, and provides guidelines for carrying out those goals. Our National Education Policy (NEP) is one such public policy based on the perceived educational needs that the country visualises to address through education. It has come up through a process of deliberation that marks a policy-making process.

The National Education Policy was established in the year 2020. The policy is anticipated as one of the [illegible] and game-changer documents that has been [illegible] and formulated with the objective of bringing

CONTENTIONS OVER NEP 2020

Critics who are apprehensive about NEP 2020, put some serious questions such as it being premised on a biased and exclusionary approach. This exclusionary approach seeks to otherise and this otherisation culminates in bigotry. Few educationists allege that the Union government is trying to control campuses through concepts like the NEP because they want to capture the idea. Another allegation is about the Bhartiyakaran of Education. 'Bharatiyakaran' is not about India, the Indian knowledge system, the attainments in the field of knowledge through Indian history, from the ancient past through the medieval period into the modern period, but focuses specifically on the ancient period. They say this needs to be called out as communalisation, rather than seeing it as idiosyncrasies. These allegations are to be taken into account and it is necessary to make education aligned to the 'Idea of India'.

We need to plan for excellence and advancement of society in all its domains, but only by balancing excellence with equity. If education is to be an institution to fulfil constitutional guarantees, we need to look at policy and practice from the lens of social justice. This then makes it imperative for all stakeholders and educationist to primarily ask; what are we investing into the system of education in terms of, our vision, resources and processes that will guarantee everyone alike an equal chance to be free from want, fear and ignorance.

NEP 2020 & NAAC

The National Education Policy 2020 (NEP 2020)